



खोया पाया

लेखिका - सुखदा राहाल्कर

यहाँ नहीं, वहाँ भी नहीं, तुम कहाँ खो गए हो? सोफे के ऊपर नहीं। बिस्तर के नीचे भी नहीं। डिब्बे के अन्दर नहीं। मेरी बहन की फ्रॉक के नीचे भी नहीं। मेरे तकिये के नीचे नहीं, मेरे बैग में भी नहीं। ऊँहूँ ऊँहूँ, तुम कहाँ चले गए हो?

मैंने हर एक कमरे में ढूँढा। मैंने हर एक किताब के नीचे देखा। मैंने कुर्सी के नीचे भी तलाश किया। मैंने स्टूल के नीचे भी देखा। तुम कहाँ खो गए हो? सैर से लौटने के बाद नानी ने कहा, “देखो यह मुझे पार्क में क्या मिला? यह लहराता है, उछल-कूद करता है, गोल-गोल घूमता है, और यह झूलता भी है।”

ओह नानी, तुम कितनी अच्छी हो! तुमने मेरा प्यारा यो-यो ढूँढ निकाला।” “यो-यो? कितना बढ़िया नाम है। यह कितना मजेदार खिलौना है! मैं इससे खेलना चाहती हूँ, मुझे इससे खेलकर बहुत मज़ा आता है!”

हँसते-हँसते, मस्ती करते, नानी मेरे प्यारे छोटे खिलौने से खेलती रहीं। पूरे दिन!

समाप्त

Click below to follow us:



YouTube

facebook



PRATHAM
BOOKS

A Book in Every Child's Hand



This story has been provided for free under the CC-BY license by Pratham Books. Illustrated by Sukhada Rahalkar.

